किले कहते कहानी हवेलियां सुनातीं कविताएं

हॉरर फिल्म के सेट जैसा रहस्यमयी वीरान गांव

- जैसलमेर से 20 किमी दूरी पर स्थित है, कुलधरा। एक रहस्यमयी वीरान गांव। एक ऐसा स्थान जो आज भी रहस्य और रोमांच से भरा है। कहा जाता है कि 1800 के दशक में यह गांव एक ही रात में वीरान हो गया था। इसके बाद कोई यहां बस नहीं सका।
- यहां खंडहर घर, टूटी दीवारें और वीरान गलियां, एक अजीब सा सन्नाटा रचते हैं। इस गांव की कहानियां आज भी लोगों के मन में डर और जिज्ञासा पैदा करती हैं। कुलधरा में सिर्फ पत्थर नहीं बचे हैं, बल्कि उस समय की पीड़ा और रहस्य जीवित हैं।

कुछ यात्राएं हमारे भीतर कुछ नया जोड़ जाती हैं, एक एहसास, एक कहानी, एक अनुभव। देहरादून से कार द्वारा एक सप्ताह की राजस्थान यात्रा में मंडावा, जैसलमेर और पिलानी की खूबसूरत झलकियों को समेटा। करीब 1800 किमी लंबी इस यात्रा ने राजस्थान के रंग, रेत और रहस्य का ऐसा अद्भुत अनुभव दिया जो जीवन भर स्मृतियों में जीवित रहेगा। मंडावा की हवेलियां, सम के धोरों पर ढलता सूरज, कुलधरा की खामोशी, सोनार किले का सौंदर्य और पटवों की हवेली का वैभव, इन सबने इस यात्रा को सैर नहीं, बल्कि आत्मिक अनुभव बना दिया। राजस्थान सिर्फ एक राज्य नहीं, बल्कि एक एहसास है, जहां हर किला एक कहानी है, हर हवेली एक कविता, और हर गांव एक रहस्य।

किसी पेंटिंग की किताब जैसी नजर आती हैं मंडावा की गलियां

सुबह देहरादून से निकलने के बाद लगभग आठ घंटे के सफर के बाद शाम को छोटे से कस्बे मंडावा में ठहराव हुआ। मंडावा अपनी कलात्मकता और ऐतिहासिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध है। इसे 'ओपन-एयर आर्ट गैलरी' कहा जाता है। यहां की हवेलियां और गलियां किसी पेंटिंग की किताब जैसी हैं। हर दीवार, हर झरोखा एक कहानी कहता है, राजसी जीवन शैली, ब्रिटिश दौर की झलक, धार्मिक प्रसंग और लोककथाएं। हवेलियों की भित्ति चित्रकारी इतनी सूक्ष्म और रंगीन कि लगा मानो इतिहास के किसी पन्ने पर चल रहे हों। बोलते हुए रंगों और शांत गलियों में सैर करते-करते एहसास हुआ कि मंडावा केवल स्थापत्य नहीं, बल्कि जीती-जागती कला है। पीके, बजरंगी भाईजान, पहेली, जब वी मेट जैसी फिल्मों की शूटिंग यहां हुई है।

थार के दिल में ढलता सूरज और स्वप्निल सुहानी रात

मंडावा से हमने रुख किया जैसलमेर की ओर, जो थार के रेगिस्तान में स्थित है। लगभग 10 घंटे की यात्रा के बाद हम पहुंचे सम सैंड ड्यून्स जो जैसलमेर शहर से लगभग 40 किमी दूर है। यहां की पहली झलक ने ही मन मोह लिया। दूर-दूर तक फैली सुनहरी रेत, ऊंटों की कतारें, रंग-बिरंगे राजस्थानी कपड़े पहने लोक कलाकार, और धीरे-धीरे ढलता सूरज। हमने ऊंट की सवारी की, डेजर्ट सफारी में जीप से दौड़ लगाई, और डेजर्ट बाइकिंग का भी रोमांच लिया। शाम को लोकनृत्य और संगीत के बीच खुले आसमान के नीचे तंबू में रात्रि विश्राम बिल्कुल नया अनुभव था। ढोल की थाप, घूमर नृत्य, और गरमा-गरम दाल-बाटी-चूरमा के साथ यह रात किसी स्वप्न जैसी बीती।

नक्काशी और दीवारों पर उकेरी गईं कलाकृतियां

जैसलमेर की यात्रा अधूरी रहती अगर हमने पटवों की हवेली नहीं देखी होती। यह एक नहीं, बल्कि पांच हवेलियों का समूह है, जो 19 वीं शताब्दी में पटवा नामक व्यापारी परिवार द्वारा बनवाया गया था। यहां की बारीक नक्काशी, झरोखे, और दीवारों पर उकेरी गई कलाकृतियां इस बात का प्रमाण हैं कि राजस्थान के व्यापारी वर्ग का वैभव और सौंदर्यबोध कितना उन्नत था। हवेली का हर कमरा, हर छज्जा कहानी समेटे है।

राजसी वैभव की सैर पर ले जाता है सोनार किला

- जैसलमेर शहर के केंद्र में स्थित विश्व प्रसिद्ध सोनार किला (गोल्डन फोर्ट) देश के कुछ गिने-चुने जीवित किलों में एक है। आज भी इसके अंदर लोग रहते हैं। पीले बलुआ पत्थर से बना यह किला जब सूर्य की रोशनी में नहाता है, तो सोने जैसा चमकता है, इसलिए इसका नाम 'सोनार किला' पड़ा। किले के अंदर संकरी गलियां, पुराने मंदिर, हवेलियां और दुकानें हैं। लगता ही नहीं कि आप किसी किले में हैं। ऐसा लगा जैसे किसी पुराने शहर की गलियों में हैं और समय पीछे चला गया है। यहां की नक्काशी और स्थापत्य कला देखने लायक है।

1800
किमी लंबी यात्रा ने राजस्थान के रंग रेत और रहस्य का ऐसा अद्भुत अनुभव दिया जो जीवन भर स्मृतियों में जीवित रहेगा

रेत रंग और रहस्य के रंगों से भरी राजस्थान की यात्रा

लेखक: रवि बिजारनियां
अध्यक्ष, पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ इंडिया, देहरादून चैप्टर।

जिंदगी हवन करें, चलो समाज के लिए...

युग दधीचि देहदान अभियान को मानवता का सबसे बड़ा महायज्ञ बनाने में लगाया जीवन

बात करीब 22 साल पुरानी है, 15 नवंबर 2003 को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री के आग्रह पर युग दधीचि देहदान अभियान प्रारंभ करते समय मन में बड़ा संशय था कि इस महायज्ञ में आहुति के लिए लोगों को तैयार कैसे किया जाएगा। दरअसल, समाज में किसी की मृत्यु होने पर उसका चितारोहण और अग्निदाह न हो इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

सामाजिक-धार्मिक मान्यताओं और बाधाओं तथा अंधविश्वास के साथ शरीर के अंतिम संस्कार की सदियों पुरानी प्रथा व कर्मकांड के बीच लोगों को यह समझाना काफी कठिन काम था कि देहदान किसी महादान से कम नहीं है। लेकिन समाज की आस्था और प्रचलित मान्यता के विपरीत नया रास्ता

बनाने के संकल्प को पत्नी माधवी का साथ मिलने से साहस बढ़ा। वर्ष 1993 में अंतरजातीय विवाह करने के कारण हम दोनों ने पारिवारिक, सामाजिक विरोध के जिन झंझावातों को झेला था, उसने चुनौतियों से निपटने और संकल्प से पीछे नहीं हटने का हौसला पहले ही दे रखा था। इसी के चलते एक नई मिसाल खड़ी करने के लिए आजीवन निःसंतान रहकर अपनी पूरी ऊर्जा समाज हित में लगाने का निर्णय लिया। इसी बीच आजाद हिंद फौज की रानी झांसी रेजिमेंट की लेफ्टिनेंट रहीं मानवती आर्या ने अपने पति का स्वयं अपने हाथों से 20 जनवरी 2003 को देहदान कानपुर मेडिकल कॉलेज को किया। यह घटना जीवन में एक नई दृष्टि, नई रोशनी लेकर आई, जिसके प्रकाश ने युग दधीचि देहदान अभियान की राह दिखाई। फिर क्या था, हम पति-पत्नी समाज को देहदान की महत्ता समझाने सड़क पर निकल पड़े।

निःसंतान रहने का व्रत लिया, दवा का व्यवसाय त्याग दिया

संतान की चाह का त्याग संसार का सबसे कठिन काम है और उससे भी कठिन है आज के भौतिकवादी समाज में धन के लोभ का परित्याग, लेकिन अपने मिशन के लिए आजीवन निःसंतान रहने के संकल्प के साथ दवा का व्यवसाय भी त्याग दिया। इसी संकल्प के साथ जेके कॉलोनी जाजमऊ स्थित घर से हम पति-पत्नी रोज अपने अभियान पर निकलने लगे। युग दधीचि देहदान अभियान आज प्रदेश भर के मेडिकल कॉलेजों में चिकित्सा शिक्षा के लिए बड़ा वरदान बन गया है। कानपुर शहर और देहात,कन्नौज, फतेहपुर, औरैया, लखनऊ, इलाहाबाद,अयोध्या, सैफई, अंबेडकर नगर, आगरा, एम्स गोरखपुर, एम्स रायबरेली, बदायूं, पीलीभीत, वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज दिल्ली एवं गवर्नमेंट मेडिकल साइंसेज ग्रेटर नोएडा को अब तक 300 पार्थिव देह दान की जा चुकी हैं। चार हजार से अधिक लोग देहदान का शपथ पत्र भरकर सौंप चुके हैं।

छह माह के कृष्णम के साथ नामचीन लोग बने देहदानी

चिकित्सा जगत की सेवा और समाज को घातक बीमारियों से मुक्त बनाने के लिए लोगों को मरणोपरांत अपनी देह मेडिकल कॉलेजों को दान करने के लिए तैयार करना शुरू किया। जागरूकता की अलख जगी तो 20 अगस्त 2006 को कानपुर देहात स्थित डेरापुर से पहली देह 21 वर्षीय बऊआ दीक्षित की लाकर कानपुर मेडिकल कॉलेज को दान करने में सफल हुए। इसके बाद तो समाज के नामचीन लोगों डॉ प्रतीक मिश्र, सरदार मंजीत सिंह, डॉ लक्ष्मी सहगल, विधायक भगवती सिंह विशारद, मानवती आर्या, पद्मश्री गिरिराज किशोर, पं. बद्रीनारायण तिवारी, रूपकुमारी खेतान, वीरांगना निर्मला देवी कटियार, स्वाधीनता सेनानी रघुवंशी लाल सचान, समाजवादी रघुनाथ सिंह के साथ सबसे छोटे छह माह के देहदानी कृष्णम मिश्र का नाम भी देहदानियों में जुड़ गया। इस महाअभियान में पत्नी माधवी ने अपने परिवार से अपनी मां सोनदाई देवी, पिता दामोदर लाल दास एवं चाचा विपिन कुमार की देह अपने हाथ से कानपुर मेडिकल कॉलेज को दान की।

इसलिए आवश्यक है देहदान

- सरकार करोड़ों रुपये खर्च करके मेडिकल कॉलेज तो बनवा सकती है पर चिकित्सा शिक्षा अध्ययन के लिए मानव देह उपलब्ध कराना उसके वश में नहीं है। मेडिकल कॉलेजों में दाखिला लेते ही प्रथम वर्ष के छात्रों को अपना अध्ययन मानव देह पर शोध करके ही प्रारंभ करना होता है। मृत देह जिसे चिकित्सकीय भाषा में केडबर कहते हैं के बिना न तो प्रथम वर्ष की पढ़ाई हो सकती है और न निष्णात चिकित्सक तैयार हो सकते हैं। आदर्श स्थिति में एक केडबर पर दस छात्रों को अध्ययन करना चाहिए पर अभी मेडिकल कॉलेजों में इतने केडबर नहीं हैं। देहदान अभियान के प्रयास से धीरे धीरे यह कमी पूरी हो रही है।

लेखक: मनोज सेंगर
संस्थापक एवं प्रमुख युग दधीचि देहदान अभियान